REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 9 | JUNE - 2018

सामाजिक परिवर्त्तन में शिक्षा की भूमिकाः दरभंगा नगर के संदर्भ में एक अध्ययन

प्रिया कुमारी
शोध शिक्षार्थी , एम० ए०, (समाजशास्त्र),
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा.

भूमिका

कुछ समाजशास्त्री सामाजिक परिवर्तन और सांस्कृतिक परिवर्तन में भेद नहीं करते हैं। डासन और गेटिस के शब्दों में सांस्कृतिक परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन हैं क्योंकि संस्कृति अपनी उत्पत्ति, अर्थ और प्रयोग में सामाजिक है। इसके विपरीत कुछ समाजशास्त्री इन दोनों को भिन्न मानते हैं। वास्तविकता यह है कि सामाजिक परिवर्तन और सांस्कृतिक परिवर्तन में अंतर होता है। सामाजिक परिवर्तन का अर्थ है समाज की संरचना अर्थात् अन्तःक्रियाओं में परिवर्तन और सांस्कृतिक परिवर्तन का अर्थ है समाज की संस्कृति के मूल तत्त्वों अर्थात् रहन–सहन एवं खान–पान की विधियों, रीति–रिवाजों, कला–कौशलों, संगीत–नृत्य, धर्म–दर्शन, आदर्श–विश्वास और मूल्यों के विशिष्ट रूप में परिवर्तन। यह बात दूसरी है कि इस परिवर्तन को व्यवहार में सामाजिक परिवर्तन के रूप में ही देखा जाता है। जैसे कुछ समय पूर्व तक हमारे समाज में सवर्ण और अछूत एक–दूसरे से अलग रहते थे और यदि ब्राह्मण अछूत से छू जाते थे तो उन्हें स्नान करना पड़ता था, परन्तु आज सभी जातियों के बच्चे एक साथ स्कूलों में पढ़ते हैं, एक साथ मोटर और रेलगाड़ियों में सफर करते है और एक साथ दफ्तरों में काम करते है। सवर्ण और अछूतों के सामाजिक सम्बन्धों के इस परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन कहते है। अब यदि सवर्ण और अछूतों के मस्तिष्क से यह वर्ग भेद समाप्त हो जाए और उनमें रोटी–बेटी के संबंध होने लगे तो यह सांस्कृतिक परिवर्तन होगा।

यहाँ स्पष्ट करना उचित प्रतीत होता है कि यह आवश्यक नहीं है कि सभी सामाजिक परिवर्तन सांस्कृतिक परिवर्तन हो, परंतु यह आवश्यक है कि सभी सांस्कृतिक परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन होते हैं।

शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन का गहरा संबंध है। कोई समाज अपनी आवश्यकताओं और आकांक्षाओं की पूर्ति शिक्षा द्वारा ही करता है। सामाजिक दृष्टि से शिक्षा के समस्त कार्यो को दो वर्गो में अभिव्यक्त किया जा सकता है– एक सामाजिक नियंत्रण और दूसरा सामाजिक परिवर्तन। सामाजिक नियंत्रण का अर्थ है समाज की संरचना, उसके व्यवहार प्रतिमानों और कार्य–विधियों की सुरक्षा और सामाजिक परिवर्तन का अर्थ है समाज की संरचना, उसके व्यवहार प्रतिमानों और कार्य–विधियों में परिवर्तन। शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है। यह समाज में होने वाले परिवर्तनों को स्वीकार करती हुई आगे बढ़ती है और बदलते हुए समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति में मनुष्य की सहायता करती है। ज्ञान और तकनीकी में वृद्धि शिक्षा के माध्यम से ही होता है। जिसके पास जितना अधिक शिक्षा एवं तकनीकी ज्ञान होता है वह उतनी तेजी से आगे बढ़ती है।

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक शक्तिशाली साधन है। सामाजिक परिवर्तन का मूल कारण शिक्षा ही होता है। मनुष्य विकास शिक्षा के माध्यम से ही करता है। पहले तो वह अपनी जाति की सामाजिक चेतना में भाग लेता है और उसकी भाषा, रहन–सहन और खान–पान के तरीकों, रीति–रिवाज और मान्यताओं, विश्वासों,

आदर्शो और मूल्यों से परिचित होता है। इस सबके ज्ञान के लिए सभी सभ्य समाज औपचारिक शिक्षा की व्यवस्था करते है। इस शिक्षा से मनुष्य का मानसिक विकास होता है, वह अपने तथा समाज के और इस पूरे संसार के बारे में सदैव सोचता रहता है। समाज में रहकर वह अनेक अनुभूतियाँ करता है और यदि संवेदनशील होता है तो समाज की आवश्यकताओं और समस्याओं की अनुभूति भी करता है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति और समस्याओं के हल के लिए वह विचार करता है तथा उनके हल खोजता है और इससे समाज को प्रभावित करता है। शिक्षा के अभाव में यह सब कार्य सम्भव नहीं है।

इतिहास पर दृष्टिपात करने पर ज्ञात होता है कि हमारे देश में प्राचीन काल की शिक्षा धर्मप्रधान थी, उसकी पाठ्यचर्या में धर्म और नैतिकता मुख्य विषय था और इनकी शिक्षा पर ही सबसे अधिक बल दिया जाता था। परिणामतः समाज में भी धर्म का बोलबाला था और लोगों का भौतिक अर्थात् सामाजिक जीवन भी उससे प्रभावित था। आत्मा–परमात्मा के अस्तित्व को अस्वीकार कर चार्वाकों ने जो शिक्षाएँ दी उसके खाओं–पिओं और मस्त रहो का विचार आगे आया और लोग इस भौतिक सुख को ही सुख समझने लगे, और तब समाज का रूप पहले से भिन्न हो गया। बौद्ध धर्म की शिक्षाओं का अशोक महान पर क्या प्रभाव पड़ा, इससे हम सभी परिचित है। खून–खराबी द्वारा अपने प्रभुत्व का विस्तार करने वाला समाज सहअस्तित्व के सिद्धांत में विश्वास करने लगा था। वर्तमान युग पर दृष्टिपात करने से भी इस सत्य का समर्थन होता है। अंग्रेज भारत में आए, उन्होंने अंग्रेजी पढ़े–लिखे बाबू तैयार करने शुरू किए। उनके द्वारा जिस शिक्षा का विधान हुआ, उसने हमारे दृष्टिकोण में भारी परिवर्तन किया, परिणामतः हमारे समाज में भी परिवतन हुआ। इस शिक्षा ने धार्मिक अन्धविश्वासों, जातीय संकीर्णता और ज्ञान के क्षेत्र में कूपमंडूकता को समाप्त किया और देश में जागृति की लहर दौड़ गई और उनके सामाजिक बुराईयों जैसे– सती प्रथा, बाल विवाह का अन्त हो गया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हमने वर्गविहीन एवं धर्मनिरपेक्ष समाज के निर्माण का बीड़ा उठाया है और यह कार्य शिक्षा द्वारा ही कर रहे है। जाहिर है कि शिक्षा के द्वारा खान–पान, रहन–सहन, बोल–चाल एवं आहार–व्यवहार में भी परिवर्तन होता है। स्पष्ट रूप में हम कह सकते है कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन करती है। अतः प्रस्तुत शोध में इसका गहन विश्लेषण किया जाएगा।

प्रासंगिकता

प्रत्येक समाज अपनी शिक्षा का निर्माण स्वयं करता है। अतः उसका स्वरूप वैसा ही होता है जैसा समाज होता है। यदि समाज में कुछ परिवर्तन आते हैं तो वह समाज अपनी शिक्षा को उसी के अनुरूप बदलने का प्रयत्न करता है। स्पष्ट है कि शिक्षा द्वारा सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक परिवर्तन द्वारा शिक्षा में परिवर्तन का चक्र सदैव चलता रहता है। जिस समाज में यह चक्र जितना अधिक तीव्र गति से चलता है वह समाज उतना ही प्रगतिशील कहलाता है। सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की अहम भूमिका रही है। अतः प्रस्तुतः अध्ययन सर्वथा औचित्यपूर्ण एवं प्रासंगिक है।

पूर्व अध्ययनों की समीक्षा

डॉ० एस.पी.गुप्ता एवं डॉ० अलका गुप्ता ने अपनी पुस्तक 'भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें में स्पष्ट किया है मानव एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में अन्य मानवों के साथ मिल–जुलकर रहता है। पारस्परिक जागरूकता, समानता व भिन्नता, सहयोग व संघर्ष तथा परस्पर निर्भरता पर आधारित सम्बन्धों से युक्त व्यक्तियों के संगठन को समाज कहा जाता है। किसी भी समाज में परिवर्तनों का होना स्वाभाविक व सतत प्रक्रिया होती है। कुछ समाजों में होने वाले परिवर्तनों की गति तीव्र होती है तथा कुछ समाजों में परिवर्तनों की गति मन्द होती है। सामाजिक परिवर्तन अनेक कारकों से प्रभावित होता है। शिक्षा को वांछित सामाजिक परिवर्तन लाने का एक सशक्त साधन स्वीकार किया जाता है।

डॉ० रामशकल पाण्डेय ने अपनी कृत्ति ''उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक'' में सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। इसका समाज के साथ घन्ष्ठि संबंध होता है। सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा का महत्त्वपूर्ण योग रहता है। समाज अपनी आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए शिक्षा पर निर्भर करता है। शिक्षा के द्वारा ही समाज के सदस्यों के आचरण एवं विचारों में परिवर्तन होता है। समाज में होने वाले आविष्कारों तथा शैक्षिक प्रगति के कारण नवीन विचार

जन्म लेते हैं जो सामाजिक परिवर्तन के लिए आधार प्रस्तुत करते हैं। शिक्षा इन नवीन विचारों का प्रसार करके उनको लोकप्रिय बनाने का प्रयास करती है। सामाजिक परिवर्तनों को स्वीकार करने के लिए शिक्षा अनुकूल वातावरण का सृजन करती है तथा व्यक्तियों को इन परिवर्तनों को स्वीकार करने के लिए मानसिक रूप से तैयार करती है।

डॉ० एस.एस. माथुर ने ''शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार' में सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका का उल्लेख करते हुए स्पष्ट किया है कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सबसे अधिक शक्तिशाली यन्त्र है। शिक्षा द्वारा ही समाज में वास्तविक परिवर्तन होता है और वह आधुनिक बनता है। शिक्षा व्यक्तियों को सामाजिक परिवर्तनें के लिए तैयार करती है। यह आवश्यकताओं के रूप में परिवर्तन लाती है और वर्तमान स्थिति के सम्बन्ध में विफलता की भावना उत्पन्न करती है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तनों को प्रारंभ करती है और उनको एक दिशा तथा प्रयोजन प्रदान करती है।

उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट होता है कि विभिन्न विद्वानों ने सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका के महत्त्व को रेखांकित किया है।

अध्ययन क्षेत्र

वर्तमान शोध क्षेत्रीय अध्ययन पर आधारित है। समय एवं साधन को देखते हुए दरभंगा नगर का चयन अध्ययन क्षेत्र के रूप में किया गया है। दरभंगा नगर में लोग शिक्षित है। यहाँ दो विश्वविद्यालय, दर्जनों महाविद्यालय एवं निजी तथा सरकारी विद्यालय है। दरभंगा के रहन–सहन, खान–पान में तीव्रगति से परिवर्तन हो रहा है। प्रस्तुत शोध में इसका विस्तृत अध्ययन किया जाएगा।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध हेतु निम्नांकित उद्देश्यों का निरूपण किया गया हैः

(i) सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका को दर्शाना।

(ii) महिलाओं की स्थिति के परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका का अवलोकन करना।

(iii) व्यक्ति के रहन–सहन, खान–पान एवं व्यवहार परिवर्तन में शिक्षा के महत्त्व को रेखांकित करना।

(iv) जाति एवं वर्गगत भेद–भाव मिटाने में शिक्षा की भूमिका को ज्ञात करना।

सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका

सामाजिक का अर्थ समाज सम्बन्धी तथा परिवर्तन का तात्पर्य पहले की स्थिति में भिन्नता अथवा हेर–फेर है। इस प्रकार सामाजिक परिवर्तन का अर्थ समाज संबंधी हेर–फेर अथवा समाज में होने वाले परिवर्तन से है। वस्तुस्थिति यह है कि मानव का जीवन सदैव एक सा नही रहता अपितु उसके विचारों, आदर्शो तथा मूल्यों में किसी–न–किसी प्रकार का परिवर्तन सदैव होता रहता है। इस दृष्टि से यदि मानव के जीवन में परिवर्तन का होना आवश्यक है तो मानव की इकाई से बने हुए समाज में भी परिवर्तन का होना स्वाभाविक ही है। दूसरे शब्दों में, जिस प्रकार मनुष्य गतिशील है, ठीक उसी प्रकार मनुष्य द्वारा निर्मित समाज की गतिशीलता होता है। यह हो सकता है कि किसी समाज में परिवर्तन बड़ी तेजी के साथ हो रहे हों तथा किसी में देरी से। परंतु यह निर्विवाद सत्य है कि संसार का कोई समाज परिवर्तन की लपेट से बच नहीं सकता। भारतीय समाज को ही देखने से स्पष्ट होता है कि जिन वस्तुओं का उपयोग हम आज कर रहे हैं उनके सम्बन्ध में हमारे पूर्वजों ने सम्भवतः कभी कल्पना भी नहीं की होगी और यह परिवर्तन लाने में अगर एक शब्द में पूछा जाय कि किसी कारण इतनी तीव्र गति से परिवर्तन हो रहा है तो वह है शिक्षा। शिक्षा ने समाज को सर्वाधिक प्रभावित किया है।

शिक्षा तथा सामाजिक परिवर्तन

प्रसिद्ध समाजशास्त्री प्रो. योगेन्द्र सिंह ने स्पष्ट किया है कि ब्रिटिश शासन की स्थापना के बाद प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर के शिक्षण संस्थानों के विकास के साथ 1857 ई0 में बंबई, कोलकत्ता तथा मद्रास विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई। ब्रिटिश शासन के अंतिम काल खंड तक 15 अन्य विश्वविद्यालयों की भी

स्थापना की गई। स्वतंत्रता के बाद शिक्षण संस्थानों के तीव्र विकास के संकेत मिल रहे हैं। योगेन्द्र सिंह के अनुसार शिक्षण संस्थानों में विकास के बावजूद शिक्षा की विकास दर बहुत अधिक प्रभावी नहीं रही। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि भारतीय सामाजिक स्तरीकरण व्यवस्था में सामाजिक गतिशीलता तथा परिवर्तन के संकेत उत्साहवर्धक नहीं रहे हैं। प्रो0 योगेन्द्र सिंह के अनुसार उच्च शिक्षा पर अभी भी अभिजात्य वर्गो का वर्चस्व बरकरार है। अशिक्षितों की भारी तादाद देश के कोने–कोने में मौजूद है। यू. एस. ए. जापान तथा सीलोन की तुलना में भारत में शिक्षा मद में व्यय भी बहुत सीमित मात्रा में किया जाता है।

सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा का महत्त्व

सामाजिक परिवर्तन सविधिक एवं अविधिक शिक्षा–साधनों द्वारा तो उत्पन्न होती ही है, परन्तु संयोग द्वारा उत्पन्न परिवर्तन जिनकी पूर्व नियोजित योजना तथा विचारधारा नहीं होती है, भी हुआ करते हैं। ये संयोग द्वारा होने वाले परिवर्तन सुखदायक और दुखदायक दोनों प्रकार के हो सकते हैं तथा अनिश्चत भी होते हैं। अतः इन परिवर्तनों पर आश्रित रहना बुद्धिमता का लक्षण नहीं माना जा सकता है।

सामाजिक परिवर्तन पर वांछित लाकर संयोगजन्य परिवर्तनों के दुष्परिणामों को कम किया जा सकता है। जैसे अतिवृष्टि एवं सूखा पड़ने की स्थितियाँ संयोगाधीन परिवर्तन हैं, परंतु बाँध बाँधकर जल राशि पर नियंत्रण करके सिंचाई व्यवस्था कर लेने से बाढ़ की स्थिति तथा सूखे की स्थिति के परिवर्तनों के अनुकूल ढलने और उनके दुष्परिणामों से बचने में सफलता प्राप्त की जा सकती है। बाँध बाँधने की क्रिया पूर्ण प्राविधिक, अविष्कृत एवं खोजपुर्ण है। इन आविष्कार, खोज और परीक्षण का विकास शिक्षा द्वारा ही सम्भव हुआ है। अतः शिक्षा सामाजिक परिवर्तन पर मनोवांछित नियंत्रण करने में योग देती है।

अनुसंधान, अन्वेषण एवं परीक्षण शिक्षा–प्रसार द्वारा ही लाये जा सकते हैं जिनसे विविध सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन तीव्र एवं नियंत्रित विकास द्वारा प्रोत्साहित हुआ करते है। जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है, मानव की कल्पना–शक्ति एवं विधायकता की मनोवृत्ति से विविध आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अनुसंधान, अन्वेषण एवं परीक्षण करने के अवसर प्रदान किये गये। शिक्षा द्वारा कल्पना–शक्ति का विकास तथा विधायकता की प्रवृत्ति की सन्तुष्टि होती है। वह सन्तुष्टि व्यक्ति के लिए अनुसंधान, अन्वेषण एवं परीक्षण करने के लिए बाध्य किया करती है। शिक्षा द्वारा पुरातन मान्यताओं की सुरक्षा एवं प्रसार होता है और नवीन मान्यताओं की स्थापना करने में योग मिलता है। ये ही मान्यताएँ व्यक्ति को सामाजिक परिवर्तन लाने में योग दिया करती है। विविध शिक्षा–संस्थाएँ चाहे वे राजकीय है, सामाजिक है, धार्मिक है, व्यवहारिक है, वैज्ञानिक हैं अथवा किसी भी प्रकार की है, शिक्षा–प्रसार करके सामाजिक परिवर्तन पर वांछित नियंत्रण करती है।

निष्कर्ष

सामाजिक परिवर्तन और शिक्षा का गहरा संबंध है। कोई समाज अपनी आवश्यकताओं और आकांक्षाओं की पूर्ति शिक्षा द्वारा करता है। शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है। यह समाज में होने वाले परिवर्तनों को स्वीकार करती हुई आगे बढ़ती है और बदलते हुए समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति में मनुष्य की सहायता करती है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि सामाजिक परिवर्तन शिक्षा के स्वरूप, उसके उद्देश्य और पाठ्यचर्या आदि सभी को बदलते हैं। इस प्रकार शिक्षा सामाजिक परिवर्तन करती है और सामाजिक परिवर्तन शिक्षा को प्रभावित करते हैं और यह चक्र सदैव चलता रहता है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक शक्तिशाली साधन है। सामाजिक परिवर्तन के मूल घटक अर्थात् समाज की संरचना, उसके व्यवहार प्रतिमान और कार्य–विधि के विकास का भी मूल कारण शिक्षा ही होती है।

भारतीय संदर्भ में शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण कारक माना गया है। यह भी एक कारण है कि नई शिक्षा नीति के तहत प्रारंभिक शिक्षा के अविलम्ब सार्वभौमीकरण पर बल दिया गया था। इसका उद्देश्य सामान्य व्यक्ति को ऐसे जीवन के लिये तैयारी करना है जिसमें आधुनिक संसार को समझने, नैपुण्य प्राप्त करने तथा सुसंस्कृत उपलब्धियों की ओर आगे बढ़ने की क्षमता हो। प्रौढ़ शिक्षा के कार्यक्रम को भी इसी लक्ष्य की सिद्धि हेतु युद्ध स्तर पर लागू करने का संकल्प है। इसी प्रकार माध्यमिक और तृतीयक (उच्च) शिक्षा की संरचना में भी औद्योगिक दोहरेपन और अर्थव्यवस्था में सामान्य कौशलों के स्तर को ऊँचा उठाने की संस्कृति है। तृतीयक शिक्षा के जरिये सही मूल्यों का संवर्धन करने और सामंतवादी सामाजिक व्यवस्था की

स्थापना हेतु उपयुक्त राष्ट्रीय वातावरण तैयार करने के लिए विशेष आग्रह है। यह महसूस किया गया है कि नारी शिक्षा के क्षेत्र में नया आयाम जोड़ना आवश्यक है। जिससे सामान्य लड़कियों की आकांक्षाओं, स्त्रियों की भूमिका और उनके उत्तरदायित्वों के बारे में व्यापक जन–चेतना पैदा किया जा सके।

संदर्भः

1. सिंह योगेन्द्र (1973)ः मॉडर्नाइजेशन ऑफ इण्डियन ट्रेडिशन, थॉमसन प्रेस इण्डिया लिमिटेड, फरीदाबाद, पृ0 150
2. वही, पृ0 151
3. वही
4. वही, पृ0 152
5. श्रीनिवास, एम.एन. (1966): सोशल चेंज इन मार्डन इंडिया, लॉस ऐन्जलिस, कॉलिफॉर्निया, पृ0 23
6. ओटावे, ए.के.सी. (1990)ः फिलॉस्फी ऑफ एजूकेशन, पृ0 51
7. मजूमदार, रायचौधरी एवं दत्त (1999) इन एडभांस हिस्ट्री ऑफ इंडिया, पृ0 960
8. सैयदेन, के.जी. (1985) एजूकेशन, कल्चर एण्ड द सोशल ऑर्डर, पृ0 26
9. वही, पृ0
10. ऑगबर्न, विलियम (1922)ः सोशल चेंज,
11. ओटावे, ए.के.सी. (1990)ः पूर्वोक्त, पृ0 56
12. वही
13. वही, 57
14. सैयदेन, के.जी. (1985), पूर्वोक्त, पृ0 30